स्वदेश-प्रेम

अथवा जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी

निम्न टॉपिक पर भी यही निबंध लिख सकते हैं –

☞ *देश प्रेम की भावना, स्वदेश प्रेम एवं राष्ट्रीयता, करो देश पर प्राण निछावर, स्वदेशानुराग*

रूपरेखा –

- ★ *प्रस्तावना*
- ★ *स्वदेश प्रेम का अभिप्राय*
- ★ *देश के प्रति कर्तव्य*
- ★ *देश-प्रेम का आदर्श*
- ★ *देशभक्तों की कामना*
- ★ *देश-प्रेम की स्वाभाविक भावना*
- ★ *उपसंहार*

प्रस्तावना - *"जो भरा नहीं है भावों से, बहती जिसमें रसधार नहीं। वह हृदय नहीं है पत्थर है, जिसमें स्वदेश का प्यार नहीं॥"* उक्त पंक्तियां यह स्पष्ट करती हैं कि प्रत्येक सहृदय व्यक्ति में स्वदेश प्रेम की भावना होती है । जिस हृदय में अपने देश के प्रति अनुराग नहीं हैं, वह भावना शून्य , संवेदनाविहीन अर्थात् पत्थर के समान है। जननी और जन्मभूमि को स्वर्ग से भी बढ़कर माना गया है –

"जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी।"

स्वदेश प्रेम का अभिप्राय- साधारण शब्दों में देश-प्रेम से तात्पर्य अपने देश से प्रेम करने से है। जिस देश में हमने जन्म लिया है, उसके प्रति अपने कर्तव्य का पालन करें, हमारे हृदय में देश के लिए त्याग एवं बलिदान की भावना होनी चाहिए। सच्चा राष्ट्र-प्रेमी, इन्हीं भावनाओं से भरा होता है। देश से वह कोई अपेक्षा नहीं रखता, किन्तु आवश्यकता पड़ने पर देश के लिए अपना तन-मन-धन सब कुछ समर्पित करने के लिए तत्पर रहता है।

Gyansindhu Classes

रामनरेश त्रिपाठी जी के शब्दों में –

"सच्चा प्रेम वही है जिसकी तृप्ति आत्मबल पर हो निर्भर।
त्याग बिना निष्प्राण प्रेम है करो प्रेम पर प्राण न्योछावर॥"

डॉ० वासुदेव शरण अग्रवाल के अनुसार राष्ट्र के तीन तत्व हैं – भूमि, जन और संस्कृति हमें इन तीनों से प्रेम होना चाहिए, तभी हम सच्चे देश प्रेमी हैं। जिसे इस देश के इतिहास के बारे में नहीं पता, जो यहाँ की भूमि, पर्वत, नदियों से परिचित नहीं, वो इस देश का सच्चा भक्त नहीं हो सकता। इसीलिए कवि ने कहा है-

"जिसको न निज गौरव तथा निज देश का अभिमान है।
वह नर नहीं नर पशु निरा है और मृतक समान है।"

देश के प्रति कर्तव्य —हम सभी बच्चे अक्सर गाते हैं- *"अन्न जहाँ का हमने खाया। वस्त्र जहाँ के हमने पहने। वो है प्यारा देश हमारा। इसकी रक्षा कौन करेगा? हम करेंगे! हम करेंगे!"* देश के लिए अपने प्राणों का बलिदान करने वाले सैनिक जो सीमा की सुरक्षा करते हैं, केवल वे ही देशभक्त नहीं हैं अपितु कक्षा में मनोयोग से पढ़ाने वाला वह अध्यापक भी उतना ही देशभक्त है जो भावी पीढ़ी को सद्विचार एवं सद्गुण प्रदान कर रहा है। व्यापारी मुनाफाखोरी न करके, कालाबाजारी न करके, 'आयकर एवं विक्रीकर' का सही भुगतान करके देश-प्रेम का परिचय दे सकते हैं। वकील, डॉक्टर, व्यापारी, अध्यापक, इंजीनियर, उद्योगपति यदि सब सही ढंग से अपने 'करों' का भुगतान करें तो देश की गरीबी दूर हो जाएगी।

देश-प्रेम का आदर्श —वीर शिवाजी महाराणा प्रताप, छत्रसाल बुंदेला, रानी लक्ष्मीबाई, भगत सिंह, चन्द्रशेखर, सुखदेव, राजगुरु, रामप्रसाद बिस्मिल, नेताजी सुभाषचन्द्र बोस जैसे देशभक्त हमारे आदर्श हैं। भारतवर्ष में ऐसे अनेक महापुरुष हुए हैं जिन्होंने हमारे समक्ष देश-प्रेम का आदर्श उपस्थित किया और देश की पताका का सम्मान सुरक्षित रखा। महात्मा गांधी , जवाहरलाल नेहरू, तिलक , गोखले , लाला लाजपत राय , सरदार पटेल , इन्दिरा गांधी ने जो रास्ता दिखाया उस पर चलकर ही हम सच्चे देशभक्त बन सकते हैं।

Gyansindhu Classes

देशभक्तों की कामना- देशभक्तों की अंतिम कामना यही होती है कि अपने देश पर प्राण न्यौछावर कर दें। वे देश के लिए जीते हैं और देश के लिए मर मिटते हैं। माखन

लाल चतुर्वेदी की निम्न पंक्तियाँ उल्लेखनीय हैं, जिनमें एक पुष्प यह अभिलाषा करता है—

"मुझे तोड़ लेना वनमाली उस पथ पर देना तुम फेंक।
मातृभूमि पर शीश चढ़ाने जिस पथ जाते वीर अनेक ॥"

और भी प्रत्येक व्यक्ति अपने देश के प्रति अनुराग रखता है, भले ही वहाँ की भौगोलिक परिस्थितियाँ प्रतिकूल ही क्यों न हों। कहा गया है –

"विषुवत रेखा का वासी जो जीता है नित हाँफ- हाँफ कर।
रखता है अनुराग अलौकिक वह भी अपनी मातृभूमि पर॥
ध्रुववासी जो हिम में तम में रह लेता है कांप-कांप कर
वह भी अपनी मातृभूमि पर कर देता है प्राण निछावर॥"

उपसंहार – हम सभी को इन देशप्रेमियों से प्रेरणा लेकर अपने देश के प्रति त्याग एवं वलिदान की भावना का पाठ पढ़ाना है, तभी हम देश के प्रति अपने कर्तव्य का पालन कर सकेंगे। देश प्रेम में दिखावे की जरूरत नहीं है, अपितु इस भाव को हृदय में धारण करने की आवश्यकता है। सच्चा देश-प्रेमी अपने सुख-समृद्धि की नहीं अपितु देश की सुख-समृद्धि की कामना करता है ।

Gyansindhu Classes